



C-TET

सेंट्रल टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट

CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

उच्च प्राथमिक स्तर (कला वर्ग)

भाग - 4

भूगोल एवं सामाजिक अध्ययन शिक्षण
विधियाँ



CTET LEVEL - 2 (ARTS)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
विश्व का भूगोल		
1.	पृथ्वी की गतियाँ	1
2.	अक्षांश व देशान्तर रेखाएँ	3
3.	स्थल खंड को प्रभावित करने वाले बल	7
4.	विश्व की पवन प्रणाली	8
5.	चक्रवात एवं प्रतिचक्रवात	14
6.	सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण	17
7.	पृथ्वी के जलवायु कटिबंध	19
8.	जैवमण्डल	21
9.	सौर मंडल (Solar System)	25
10.	भूकम्प (EARTHQUAKE)	29
भारत का भूगोल		
1.	भारत का विस्तार एवं स्थिति	38
2.	भारत के भौगोलिक भू-भाग	43
3.	भारतीय मानसून	71
4.	भारत की मिट्टी/मृदा	80
5.	भारत की प्राकृतिक वनस्पति	85
6.	भारतीय कृषि	89
7.	भारत के उद्योग	96
8.	भारत की जनगणना	101
9.	भारत में खनिज संसाधन	109
10.	भारत की बहुउद्देश्यीय परियोजनाएँ	118
11.	भारत की परिवहन प्रणाली	126

12.	मानव संसाधन	135
13.	पृथ्वी का वायुमण्डल	139
14.	विविध	140

शिक्षण विधियाँ

शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे – I

1.	सामाजिक विज्ञान/सामाजिक अध्ययन की संकल्पना	149
2.	कक्षा-कक्ष की प्रक्रियाएँ	152
3.	सामाजिक अध्ययन के अध्यापन सम्बन्धी समस्याएँ	160
4.	समालोचनात्मक चिन्तन	161

शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे – II

1.	पृच्छा/आनुभाविक साध्य	163
2.	शिक्षण अधिगम सामग्री एवं सहायक सामग्री	164
3.	सामाजिक, अध्ययन की शिक्षण विधि	166
4.	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी	188
5.	प्रायोजना कार्य	203
6.	सीखने के प्रतिफल	205
7.	मूल्यांकन	210

विश्व का भूगोल

पृथ्वी की गतियाँ

- पृथ्वी ध्रुवों पर चपटी एवं विषुवत् रेखीय पेटी में उभरी हुई है। ऐसी आकृति को भू-आम (Geoid) कहा जाता है। पृथ्वी का विषुवतीय व्यास 12756 किमी. तथा ध्रुवीय व्यास 12713 किमी. हैं।
- पृथ्वी अपने अक्ष पर $23\frac{1}{2}$ झुकी हुई हैं अर्थात् ध्रुवी अण्डाकार कक्षातल (Plane of Ecliptic) के साथ $66\frac{1}{2}$ का कोण बनाती है। पृथ्वी की दो गतियाँ होती हैं – (1) घूर्णन (Rotation) या दैनिक गति (2) परिक्रमण (Revolution) अथवा वार्षिक गति।

पृथ्वी एवं उसके ग्रहीय संबंध

1. **घूर्णन (Rotation)** – पृथ्वी अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर लगभग 24 घण्टों (23 घण्टे, 26 मिनट, एवं 4.09 सेकण्ड) में एक चक्कर पूरा करती है। यह अवधि एक दिन (Day) का निर्माण करती है, अतः पृथ्वी की उस गति को दैनिक गति कहते हैं।
2. पृथ्वी की विषुवतरेखीय परिधि 40,075 किमी. है, जिस पर एक बिन्दु 1669 किमी. प्रति घण्टा की दर से गतिशील होता है।

घूर्णन के प्रभाव – (Effects of Rotation) –

1. दिन –रात का होना।
2. समय का माप।
3. दिवस के विभिन्न काल।
4. ग्लोब पर किसी स्थान का स्थिति निर्धारण।
5. आकाश में ग्रहों का पूर्व से पश्चिम की ओर घूमते हुए प्रतीत होना।
6. प्रचलित पवनों एवं समुद्री धाराओं की दिशा पर प्रभाव।
7. दैनिक ज्वार भाटों में समय का अन्तर।

परिक्रमण (Revolution)

पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमते हुए अपनी कक्षा (Orbit) पर सूर्य की परिक्रमा करती है। सूर्य की परिक्रमा करते हुए पृथ्वी वर्ष में एक बार सूर्य से अधिकतम दूरी पर होती है। 3 जनवरी का पृथ्वी इनके निकटतम स्थित होती है, इसे 'उपसौर' (Perihelion) कहते हैं। 4 जुलाई को सूर्य पृथ्वी से अधिकतम दूरी पर स्थित होता है, इसे 'अपसौर' (Aphelion) कहते हैं। उपसौर के समय सूर्य से पृथ्वी की दूरी 14.7 करोड़ किमी. तथा अपसौर के समय 15.2 करोड़ किमी. होती है।

परिक्रमण के प्रभाव (Effects of Revolution) –

1. अयन वृत्तों का निर्धारण।
2. ध्रुव वृत्तों का निर्धारण।
3. मध्याह्न के समय सूर्य की ऊँचाई में अन्तर।
4. दिन व रात की लम्बाई में अन्तर – यूरोप में स्थिति नार्वे देश में अर्द्ध रात्रि के समय भी सूर्य का प्रकाश रहने के कारण उसे 'अर्द्ध रात्रि के सूर्य का देश' (Land of the Midnight Sun) कहते हैं।

5. ऋतु परिवर्तन

- (i) **21 जून की स्थिति (Summer Solstic)** – इस स्थिति में सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत् चमकता है। उत्तरी गोलार्द्ध में दिन बड़े एवं रातें छोटी होती हैं। अतः उत्तरी गोलार्द्ध में ग्रीष्म ऋतु होती है। यह स्थिति **कर्क संक्रान्ति** कहलाती है। दक्षिणी गोलार्द्ध में तिरछी किरणों के कारण रातें बड़ी तथा दिन छोटे होते हैं तथा शीत ऋतु रहती है।
- (ii) **22 दिसम्बर की स्थिति** – इस स्थिति में सूर्य मकर रेखा पर लम्बवत् चमकता है। अतः दिन बड़े व रातें छोटी होती है। यह स्थिति मकर संक्रान्ति (**Winter Solstic**) की है जब दक्षिणी गोलार्द्ध में ग्रीष्म ऋतु होती है। उत्तरी गोलार्द्ध में सूर्य की किरणों के तिरछे होने के कारण दिन छोटे व रातें लम्बी होती हैं तथा शीत ऋतु होती है।
- (iii) **21 मार्च एवं 23 सितम्बर की स्थितियाँ** – इन दोनों स्थितियों में सूर्य विषुवत् रेखा पर लम्बवत् चमकता है। सभी अक्षांशों पर दिन व रात बराबर होते हैं। दोनों गोलार्द्धों में दिन रात एवं ऋतु की समानता होने के कारण इन स्थितियों को विषुव कहा जाता है। 21 मार्च की स्थिति **बसन्त विषुव** तथा 23 सितम्बर की स्थिति **शरद् विषुव** कहलाती है।

अक्षांश एवं देशान्तर रेखाएँ

भौगोलिक जाल – ग्लोब पर उत्तर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम की ओर खींची गई रेखाओं का एक जाल होता है।

अक्षांश रेखा – विषुवत् रेखा के उत्तर व दक्षिण में पूर्व से पश्चिम की ओर खींची गयी काल्पनिक रेखाएँ अक्षांश रेखाएँ कहलाती हैं।

- कुल अक्षांश रेखाएँ – 179
- कुल अक्षांश – 181
- मानचित्र पर 181 अक्षांश दर्शाई जाती हैं।

नोट – 90° उत्तरी व दक्षिणी अक्षांश वास्तविक रूप से बिन्दु हैं न कि रेखा।

- 0° विषुवत् रेखा पृथ्वी को दो बराबर भागों में बाँटती है – उत्तरी गोलार्द्ध एवं दक्षिणी गोलार्द्ध।

अक्षांश रेखाओं की विशेषताएँ

- (i) अक्षांश रेखाएँ पूर्व से पश्चिम की ओर विषुवत् रेखा के समान्तर खींची जाती हैं।
- (ii) 0° अक्षांश या विषुवत् वृत्त सबसे बड़ा वृत्त है जिसे वृहत् वृत्त कहते हैं। जबकि अन्य अक्षांश वृत्त उत्तर व दक्षिण की ओर जाने पर छोटे होते हैं।
- (iii) विषुवत् रेखा के पास दो अक्षांशों के बीच की दूरी 110.6 कि.मी. है जबकि ध्रुवों के पास 111.7 कि.मी. है।
नोट – विषुवत् रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर इनके बीच की दूरी बढ़ती जाती है जिसका कारण पृथ्वी का चपटापन होना है।
- (iv) दो अक्षांशों के बीच का भाग 'वदम (जोन/कटिबन्ध) कहलाता है।
- (v) अक्षांशों का उपयोग किसी स्थान की स्थिति ज्ञात करने एवं पृथ्वी को ताप कटिबन्धों में बाँटने का किया जाता है।
- (vi) पृथ्वी अपने अक्ष पर $23\frac{1}{2}^\circ$ डिग्री झुकी हुई है जबकि अपने कक्ष तल से $66\frac{1}{2}^\circ$ डिग्री का कोण बनाती है।

देशान्तर / याम्योत्तर रेखा

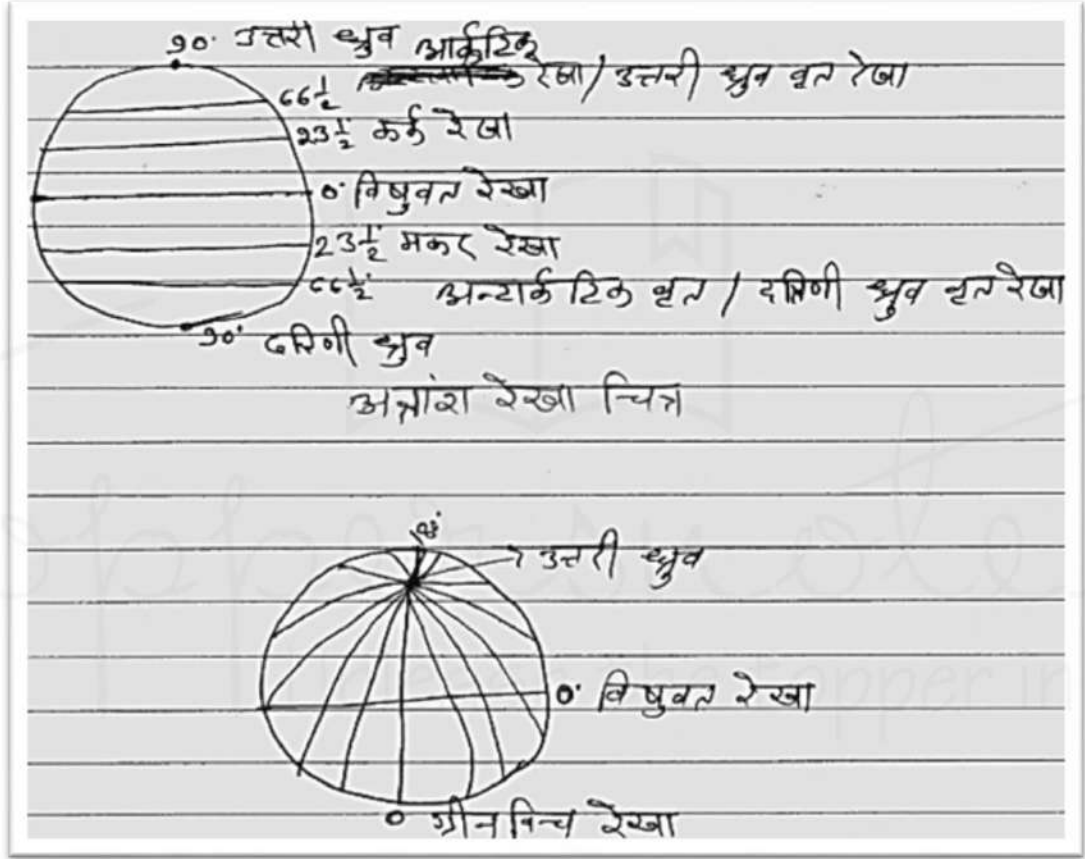
- ग्रीनविच रेखा (0°) या प्रमुख याम्योत्तर रेखा पृथ्वी को पूर्वी व पश्चिमी गोलार्द्ध में बाँटती है।
- यह रेखा पूर्व व पश्चिम में उत्तर से दक्षिण खींची जाती है।
- ग्रीनविच रेखा के पूर्व व पश्चिम की ओर समान कोणीय मान को देशान्तर कहते हैं। कुल अक्षांश रेखाएँ – 360°

देशान्तर रेखाओं की विशेषताएँ

- (I.) ग्रीनविच रेखा के सापेक्ष पूर्व व पश्चिम में उत्तर से दक्षिण की ओर खींची जाने वाली रेखाएँ।
- (II.) देशान्तर ध्रुवों से बाहर की ओर विकृत होने वाली रेखाएँ हैं जो अर्द्धवृत्त के रूप में खींची जाती हैं। दो देशान्तर रेखाएँ एक-दूसरे से विपरीत होने वाले एक पूर्ण वृत्त का निर्माण करती हैं।

- (III.) दो देशान्तरों के बीच की दूरी विषुवत् रेखा पर 111.32 कि.मी. है जो 45° उत्तरी व दक्षिणी अक्षांश पर 79 कि.मी. तथा ध्रुवों के पास शून्य हो जाती है।
- (IV.) देशान्तर रेखाओं की सहायता से किसी स्थान की स्थिति एवं समय का निर्धारण किया जाता है।
- (V.) 180° देशान्तर को 1884 ई. में वाशिंगटन सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा घोषित किया गया।

- पृथ्वी पर कुल 360° देशान्तर है। पृथ्वी अपनी धुरी पर 24 घण्टों में एक चक्र पूरा करती है।
- विश्व कुल 24 जोन समय में बाँटा गया है।
- किसी भी देश का समय निर्धारण $7\frac{1}{2}$ या 15° के अन्तराल पर किया गया है।



- दो देशान्तरों के बीच के स्थान को गोर (Gore) कहते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा

- देशान्तर को 1884 ई. में वाशिंगटन में अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा घोषित किया गया।
- अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा आर्कटिक महासागर से बेंरिंग जल संधि व प्रशान्त महासागर से होते हुए दक्षिणी ध्रुव तक जाती है।
जिसे अनेक स्थानों पर मोड़ा गया है— रूस, एल्यूशियन द्वीप सोलोमन द्वीप फिजी व टोगा द्वीप के पास।

अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा के पश्चिम से पूर्व की ओर जाने पर 1 दिन घट जायेगा जबकि पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर 1 दिन बढ़ जायेगा।

पूर्वी						पश्चिमी
		पश्चिमी गोलार्द्ध	पूर्वी गोलार्द्ध			
179°	180°	179°	ग्रीनविच	179°	180°	179°

पश्चिमी दिशा पूर्वी गोलार्द्ध	पूर्व दिशा पश्चिमी गोलार्द्ध
180°	

Q.1 यदि गोलार्द्ध में सोमवार है तो पूर्वी गोलार्द्ध में कौन – सा वार होगा ?

Ans. मंगलवार (क्योंकि पश्चिम से पूर्व की ओर जाने पर समय बढ़ता है।)

Q.2 यदि अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा के पश्चिम में 24 अगस्त है तो पूर्व में क्या दिनांक होगी ?

Ans. 23 अगस्त (क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा के पूर्व दिशा में पश्चिमी गोलार्द्ध व पश्चिम दिशा में पूर्वी गोलार्द्ध है।)

विश्व में समय निर्धारण

स्थानीय समय

- किसी देशान्तर का सूर्य के आधार पर निश्चित किया गया समय उस देशान्तर का स्थानीय समय कहलाता है।
- किसी देशान्तर के स्थानीय समय को बड़े क्षेत्र पर लागू कर दिया जाए तो उस देशान्तर के समय को मानक या प्रमाणित समय कहा जाता है।
- विश्व में समय का निर्धारण ग्रीनविच रेखा के सापेक्ष किया गया है जो ब्रिटेन के लंदन से गुजरती है।
- ग्रीनविच रेखा के पूर्व की ओर जाने पर समय को जोड़ा जाता है जबकि पश्चिम की ओर जाने पर समय को घटाया जाता है।

समय निर्धारण की प्रक्रिया

1. दिये गये स्थानों के बीच का देशान्तरीय अन्तराल निकालना।
2. निकाले गये अन्तराल को 4 से गुणा करना।
3. दिये गये स्थान के अनुसार समय को जोड़ना व घटाना।

Q.1 यदि लंदन में दोपहर के तीन बजे है। 60° पूर्वी के देशान्तर पर स्थित 'A' नगर का क्या समय होगा ?

Ans. अन्तर = 60°

$$60 \times 4 = 240 = \frac{240}{60} = 4 \text{ घंटे}$$

$$3 + 4 = 7 \text{ बजे सायं काल के।}$$

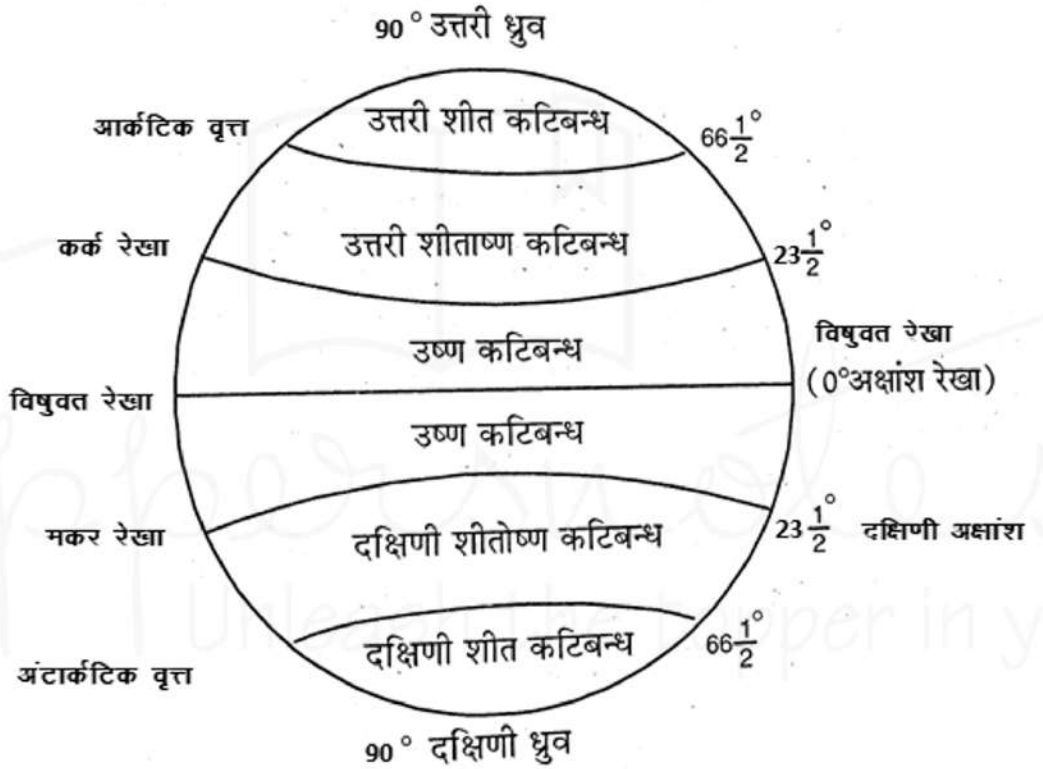
Q. 2 यदि 90° पूर्वी देशान्तर पर रात के 10 बजे 15° पश्चिमी देशान्तर पर क्या समय होगा ?

Ans. अन्तर = 105

$$105 \times 4 = \frac{420}{60} = 7$$

$10 - 7 = 3$ बजे दोपहर के।

पृथ्वी के कटिबन्ध



उत्तरी ध्रुव महासागरीय ध्रुव कहलाता है क्योंकि इसके चारों तरफ आर्कटिक महासागर फैला हुआ है। जबकि दक्षिणी ध्रुव महाद्वीपीय ध्रुव कहलाता है क्योंकि इसके चारों तरफ अंटार्कटिक महाद्वीप फैला हुआ है।

महत्वपूर्ण तथ्य –

पृथ्वी की आकृति – भू आभ (Geoid)

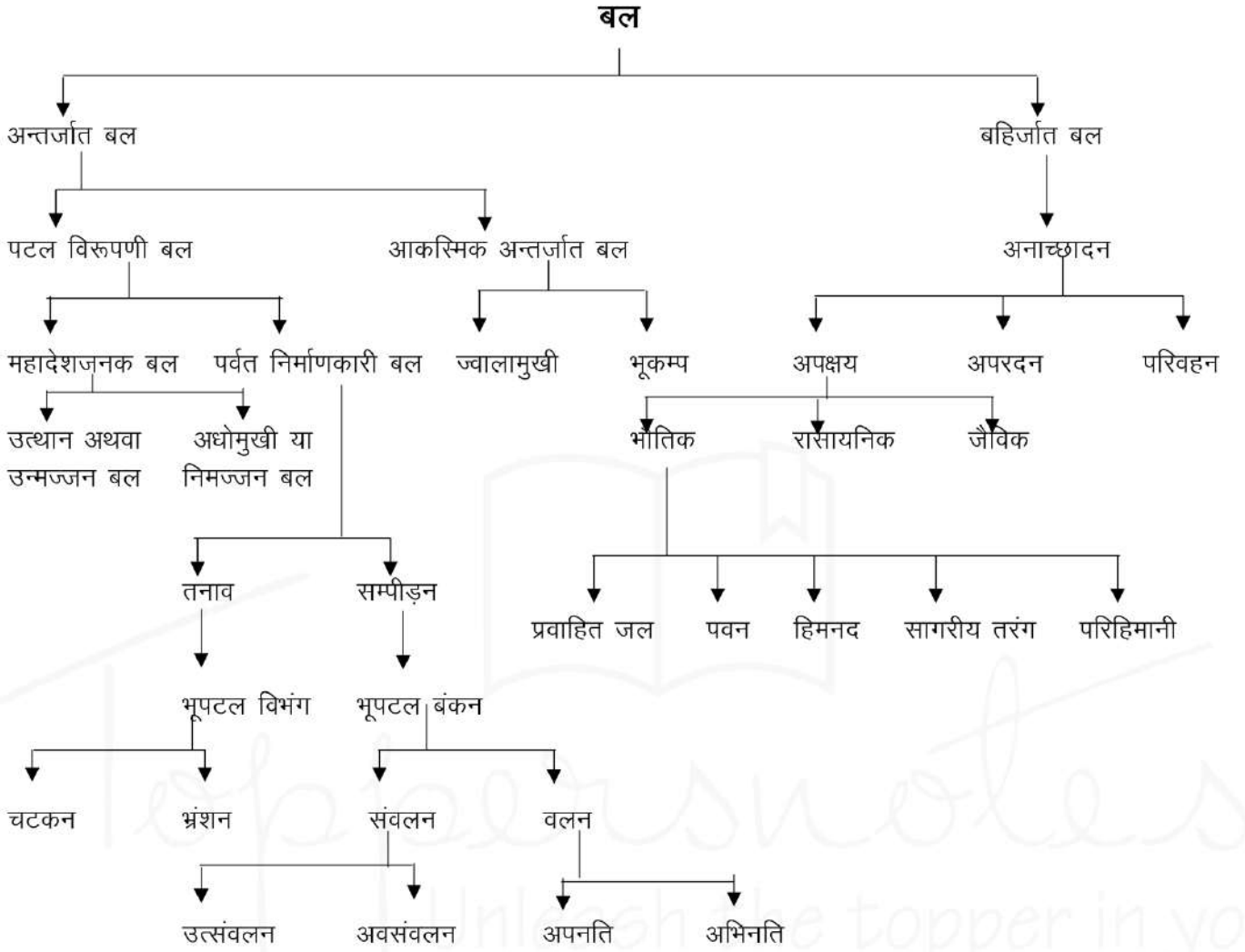
लघ्वक्ष गोलाभ (Oblate Ellipsoid)

पृथ्वी की प्रथम क्रम की स्थलाकृतियाँ – महाद्वीप एवं महासागर

पृथ्वी पर स्थल भाग – 29.2%

पृथ्वी पर जल भाग – 70.8%

स्थलखण्ड को प्रभावित करने वाले बल



शिक्षण विधियाँ

सामाजिक विज्ञान के अर्थ एवं परिभाषा

परिभाषाएँ

1. **रेवलिस** — विज्ञान अन्तः चेतना के अभाव में आत्मा का हनन करता है।
2. **वेस्ले** — सामाजिक विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन दोनों मानवीय संबंधों की विवेचना करते हैं।
 - सामाजिक विज्ञान — प्रोढावस्था तक
 - सामाजिक अध्ययन — बाल्यावस्था तक
3. **एम.पी. मुफात** — सामाजिक अध्ययन ज्ञान का वह क्षेत्र है जो युवकों को आधुनिक सभ्यता को समझने में सहायता करता है।
4. **जे.एफ. फोरेस्टर** — सामाजिक अध्ययन का ध्येय मानदण्डों, वृत्तियों, आदर्शों, रुचियों का निर्माण करना है।
5. **बाइनिंग & बाइनिंग** — सामाजिक अध्ययन विषय वस्तु का ऐसा आधार है जिसके द्वारा हम अपने छात्रों की समझ से विश्व को सरल व स्पष्ट बना सकें।

सामाजिक अध्ययन का अर्थ एवं प्रकृति

- मानव को आधार मानकर किया गया समाज का अध्ययन सामाजिक अध्ययन कहलाता है अथवा मानवीय परिपेक्ष्य में किया गया समाज का अध्ययन सामाजिक अध्ययन कहलाता है।
- किसी भी देश की उन्नति या अवनति वहाँ की सामाजिक व्यवस्था पर निर्भर करती है। यह ध्यान में रखते हुए अमेरीका ने सन् 1892 में सामाजिक अध्ययन नियम की शुरुआत की।

सामाजिक अध्ययन की प्रकृति

- विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने वाले प्रत्येक विषय की विषय वस्तु एवं संरचना होती है जिसके आधार पर उस विषय की प्रकृति निश्चित की जाती है।
- सामाजिक अध्ययन प्रकृति (विशेषता) एकीकृत या सलयनकारी है।
- **सुकरात के अनुसार** — सुकरात ने सबसे पहले बताया कि मनुष्य प्रकृति का अध्ययन कर रहा है तो उसने कहा कि मनुष्य को मनुष्य का अध्ययन करना चाहिए जिससे मनुष्य का विकास हो सके।
- **प्लेटो के अनुसार** — प्लेटों ने कहा कि मनुष्य, प्रकृति और ईश्वर तीनों एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित है।
- **अरस्तू के अनुसार** — अरस्तू ने सबसे पहले कहा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।

नोट — सामाजिक अध्ययन

1892 — अमेरिका में शुरुआत

1911 — समाज शास्त्र विषय जोड़ा गया

1916 — संवैधानिक मान्यता

1921 — राष्ट्रीय परिषद् की स्थापना

1934 — सामाजिक अध्ययन आयोग

1952-1953 — माध्यमिक शिक्षा आयोग

1955 — स्वतंत्र विषय के रूप में मान्यता

- सभी स्तरों पर सामाजिक अध्ययन सबसे पहले 1949 ई. में पंजाब में शुरुआत हुई।

सामाजिक अध्ययन की पाठ-योजना

योजना – किसी भी कार्य को करने से पहले उसकी रूपरेखा बनाना योजना कहलाता है।

- पाठ योजना का विचार गेस्टाल्टवादियों (वर्दीमर, कोहलर, कुर्ट कोपका, कुर्ट लेविन) ने दिया।
- गेस्टाल्टवादियों ने कहा था कि अध्यापक तब तक शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि वह सभी को सम्मिलित करते हुए योजना ना बना लें।
- उसी योजना को पाठ योजना/दैनिक पाठ योजना नाम से भी जाना जाता हैं।
- गेस्टाल्टवादियों के विचार को ध्यान में रखते हुए हरबर्ट स्पेंसर ने पंचपदीय सिद्धांत को आधार मानकर पाठ योजना की रूपरेखा तैयार की। अतः हरबर्ट स्पेंसर को पाठ योजना का जनक कहा जाता है।

पंच पदीय सिद्धांत – हरबर्ट

मूल पद	प्रारम्भ	संशोधित पद
प्रस्तावना	स्पष्टता	प्रस्तावना
प्रस्तुतिकरण	सम्बन्धता	प्रस्तुतिकरण
व्यवस्था	व्यवस्था	तुलना
तुलना	विधि	सामान्यीकरण प्रयोग

विधि / सामान्यीकरण / मूल्यांकन

- डॉ. B.S. ब्लूम ने पाठ योजना में शिक्षण उद्देश्यों को जोड़ा।
- H.C मॉरीशन ने हरबर्ट स्पेंसर के पंचपदीय सिद्धान्त के मूल पद और आंशिक संशोधित पद दोनों में संशोधन किया।
- इन्होंने व्यवस्था के स्थान पर शिक्षण विधि/सहायक सामग्री को तुलना के स्थान पर बोध प्रश्न /पुनरावृत्ति प्रश्नों को एवं अन्तिम पद प्रयोग के स्थान पर गृहकार्य को रखा।

गृहकार्य – कक्षा कक्ष में सीखे हुए ज्ञान को अभ्यास के द्वारा स्थायित्व देना गृहकार्य कहलाता है।

आदर्श पाठ योजना

विद्यालय का नाम	विषय	कालांश
दिनांक	प्रकरण	अवधि
कक्षा एक कालांश की अवधि 35 – 40 मिनट होती है।		
नोट – इनको श्यामपट्ट कॉपी कहा जाता है।		

शिक्षण उद्देश्य

- (i) ज्ञान
- (ii) अवबोध
- (iii) ज्ञानोपयोग
- (iv) कौशल
- (v) अभिरूचि
- (vi) अभिवृत्ति

- (i) पूर्व ज्ञान – प्रकरण से संबंधित सामान्य जानकारी
- (ii) विधि शिक्षण
- (iii) सहायक सामग्री
- (iv) प्रस्तावना

- प्रस्तावना के द्वारा यह जाना जाता है कि बालक प्रकरण के बारे में कहाँ तक या कितना जानता है।
- प्रस्तावना छात्र के पूर्व ज्ञान पर आधारित होती है।
- प्रस्तावना छात्र के स्तर अनुसार एवं क्रमबद्ध होती है।
- प्रस्तावना दो प्रकार से निकाली जाती है –
 - (a) प्रश्नोत्तरी प्रविधि
 - (b) उदाहरण/कहानी द्वारा
- प्रस्तावना का समय 5–7 मिनट निर्धारित किया गया है।
- जब प्रस्तावना प्रश्नोत्तरी प्रविधि के द्वारा निकाली जाती है तो प्रश्नों की संख्या 5–7 होती है।
- जब प्रस्तावना उदाहरण/कहानी के द्वारा निकाली जाती है तो प्रश्नों की संख्या 1–3 होती है।
- प्रस्तावना को पाठोस्थापना / विन्यास के नाम से जाना जाता है।

उद्देश्य कथन

पूर्व ज्ञान अर्थात् प्रस्तावना को नवीन ज्ञान अर्थात् प्रस्तुतिकरण से जोड़ना उद्देश्य कथन कहलाता है। उद्देश्य कथन को पाठयाभिसूचना भी कहा जाता है।

नोट – पाठ योजना में उद्देश्य कथन रीले ने जोड़ा।

प्रस्तुतिकरण

क्रम सं.	शिक्षण बिन्दु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ	शिक्षण विधि / प्रविधि	सहायक सामग्री	श्यामपट्ट सार

- (1) प्रस्तुतिकरण के अन्तर्गत शिक्षण बिन्दुओं की संख्या – 1–3
- (2) शिक्षण बिन्दु में विकासात्मक प्रश्नों की संख्या – 1–3
- (3) प्रत्येक शिक्षण बिन्दु में मूल/पुनरावृत्ति प्रश्नों की संख्या – 1–3

नोट – सामाजिक अध्ययन विषय में श्यामपट्ट सार लिखा जाता है।

मूल्यांकन प्रश्न

पाठ योजना के अंतर्गत मूल्यांकन प्रश्नों की संख्या = 5-6 होती है। इनमें से एक प्रश्न निबंधात्मक होना जरूरी है।

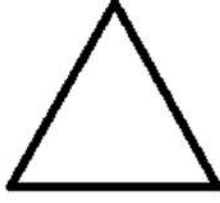
नोट

- व्यवहारिक उद्देश्यों को प्रदर्शन उद्देश्य के रूप में सभी जाना जाता है।
- शैक्षणिक उद्देश्यों के कार्यान्वयन के लिए पाठ्यक्रम एक पूर्ण योजना है।

शिक्षण (Teaching)

- अध्यापक और विद्यार्थी के मध्य होने वाली अन्तः क्रिया शिक्षण क्रिया कहलाती है।
- शिक्षण को जॉन ड्यूबी ने त्रिध्रुवीय प्रक्रिया माना है।

1. अध्यापक (स्वतंत्र चर)



2. पाठ्यक्रम (मध्यस्थ चर)

3. विद्यार्थी (आश्रित चर)

- एडम्स ने शिक्षण को द्विध्रुवीय प्रक्रिया माना है।
 1. अध्यापक (स्वतंत्र चर)
 2. विद्यार्थी (आश्रित चर)
- एडम्स के अनुसार शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे पर अर्थात् एक दूसरे के विकास में परिवर्तन के लिए कार्य करता है।

परिभाषाएँ

B.O स्मीथ के अनुसार शिक्षण क्रियाओं की एक ऐसी विधि है जो सीखने की उत्सुकता जागृत करती है। वर्ट के अनुसार शिक्षण अधिगत हेतु प्रेरणा पथ प्रदर्शन व प्रोत्साहन है। थाइन के अनुसार अधिगम में वृद्धि करना ही शिक्षण है।

शिक्षण की विशेषताएँ

1. शिक्षण एक अन्तः क्रिया है।
2. शिक्षण एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।
3. शिक्षण एक सौदशम प्रक्रिया है।
4. शिक्षण एक विकासात्मक प्रक्रिया है।
5. शिक्षण आमने-सामने होने वाली प्रक्रिया है।
6. शिक्षण एक उपचार विधि है।
7. शिक्षण का मापन किया जा सकता है।
8. शिक्षण एक तार्किक क्रिया है।
9. शिक्षण पथ प्रदर्शन है।
10. शिक्षण निर्देशन की प्रक्रिया है।
11. शिक्षण एक औपचारिक व अनौपचारिक प्रक्रिया है।
12. शिक्षण का कार्य ज्ञान में विकास करना है।
13. शिक्षण वातावरण में समायोजित होने की योग्यता विकसित करता है।
14. शिक्षण एक कौशलपूर्ण प्रक्रिया है।
15. शिक्षण छात्र तथा अध्यापक के मध्य स्वस्थ एवं मधुर सम्बन्ध स्थापित करता है।

शिक्षण के सूत्र

1. ज्ञात से अज्ञात की ओर
2. सरल से कठिन की ओर
3. विशिष्ट से सामान्य की ओर
4. पूर्ण से अंश की ओर
5. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर
6. आगमन से निगमन की ओर
7. मूर्त से अमूर्त की ओर

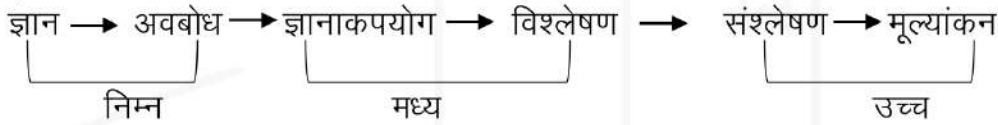
शिक्षण उद्देश्यों का वर्गीकरण

डॉ. बी.एस. ब्लूम के अनुसार शिक्षण उद्देश्यों का वर्गीकरण –

1. ज्ञानात्मक शिक्षण उद्देश्य

इस शिक्षण उद्देश्य का प्रवर्तक सन् 1956 में डॉ. बी.एस. ब्लूम ने किया।

- इसका सम्बन्ध बच्चे के कक्षा-कक्ष शिक्षण से होता है
- इसके पद निम्नलिखित हैं –



- शैक्षिक क्षेत्रीय महाविद्यालय – R.C.E

इनकी स्थापना सन् 1963 में की गई

1. भोपाल
2. भुवनेश्वर
3. शिलॉंग
4. अजमेर
5. मैसूर

- TIE – Trhionsl Institute of Education_
- RCEM ने ब्लूम के ज्ञानात्मक शिक्षण उद्देश्यों में संशोधन किया।
- इन्होंने विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन के स्थान पर सृजनात्मकता शब्द को रखा।
- इन्होंने ने बताया कि जो अर्थ विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन का होता है वहीं अर्थ सृजनात्मकता का होता है।

2. भावात्मक शिक्षण उद्देश्य

इस शिक्षण उद्देश्य का प्रवर्तन 1964 में करथवाल ने किया।

- इसका सम्बन्ध बच्चे की रुचि एवं भावना से होता है।
- प्रश्न – अनुक्रिया निम्न में से किसके अन्तर्गत आती है।

- | | |
|----------------|-----------------------|
| (A) ज्ञानात्मक | (B) भावात्मक |
| (C) क्रियात्मक | (D) इनमें से कोई नहीं |

1. आग्रहण निम्न स्तरीय
2. अनुक्रिया
3. अनुमूल्यन मध्य स्तरीय
4. प्रत्यभीकरण/प्रत्यक्षीकरण
5. व्यवस्थापन उच्च स्तरीय
6. गत्यात्मकचरित्र निर्माण

3. क्रियात्मक शिक्षण उद्देश्य

इस शिक्षण उद्देश्य का प्रवर्तन सन् 1969 सिंपसन ने किया।

- इसका सम्बन्ध बच्चे की मानसिक एवं शारीरिक क्रियाओं से होता है। पद निम्न है –
 1. उद्दीपन
 2. कार्य करना
 3. नियंत्रण
 4. समायोजन
 5. सम्भावीकरण
 6. आदत निर्माण

N.C.E.R.T के अनुसार शिक्षण उद्देश्य

प्रश्न – उदाहरण देना निम्न में से किसके अंतर्गत आता है?

- | | |
|----------------|-----------------------|
| (A) ज्ञानात्मक | (B) भावात्मक |
| (C) क्रियात्मक | (D) इनमें से कोई नहीं |

प्रश्न – प्रयोग करना निम्न में से किसके अंतर्गत आता है?

- | | |
|----------------|-----------|
| (A) ज्ञानात्मक | (B) अवबोध |
| (C) ज्ञानोपयोग | (D) कौशल |

प्रश्न – पुस्तकालय में जाकर अध्ययन करना निम्न में से किसके अन्तर्गत आता है?

- | | |
|-------------|---------------|
| (A) अवबोध | (B) कौशल |
| (C) अभिरूचि | (D) अभिवृत्ति |

प्रश्न – गलती का पता लगाकर उसमें संशोधन करना निम्न में से किसके अन्तर्गत आता है?

- | | |
|----------------|----------------|
| (A) ज्ञानात्मक | (B) ज्ञानोपयोग |
| (C) कौशल | (D) अभिरूचि |

प्रश्न – पहचान निम्न में से किसके अन्तर्गत आती है?

- | | |
|----------------|-----------|
| (A) ज्ञान | (B) अवबोध |
| (C) ज्ञानोपयोग | (D) कौशल |

N.C.E.R.T के अनुसार शिक्षण उद्देश्य

1. **ज्ञान** – पहचान, तथ्य, अव्यय, नियम, सूत्र, चिन्ह/प्रतीक परिभाषा, सिद्धान्त, क्रियाविधि।
2. **अवबोध** – उदाहरण देना, अपने शब्दों में बताना/व्याख्या करना, वर्गीकरण करना, विश्लेषण, संश्लेषण, सूची बनाना, गलती का पता लगाना।
3. **ज्ञानोपयोग** – प्राप्त ज्ञान का दैनिक जीवन में उपयोग करना, प्रयोग करना, निष्कर्ष निकालना, निर्णय लेना, विधि का चयन करना, गलती में संशोधन करना।
4. **कौशल** – चित्र बनाना, मॉडल बनाना, मानचित्र पढ़ना, ग्लोब बनाना एवं पढ़ना, ग्राफ पढ़ना, सुन्दर शीघ्र शुद्ध लिखना, चार्ट बनाना सारणी बनाना।
5. **अभिरूचि** – पुस्तकालय में जाकर अध्ययन करना, कमजोर विद्यार्थियों की सहायता करना, जीवनियाँ पढ़ना, साहित्य पढ़ना, उपन्यास पढ़ना।
6. **अभिवृत्ति** – सकारात्म (भाषा), आशावादी (SS), धनात्मक (गणित), वैज्ञानिक (विज्ञान)

वह मूल्यांकन जो किसी व्यक्ति के ज्ञान और कौशल की तुलना किसी विशेष समूह के ज्ञान और कौशल से करता है अनुदेशित मूल्यांकन कहलाता है।

- शिक्षण का त्रिसूत्र – मुदालियर आयोग (मा.शि.बोर्ड) ने 1952–1953 में दिया।
- 4H सूत्र – गाँधीजी ने दिया (Health, Hand, Head, Heart)।

शिक्षण में नवाचार

अभिक्रमित अनुदेशन— अभिक्रमित अनुदेशनों में अनुदेशन का अर्थ ज्ञान देना होता है।

- अभिक्रमित अनुदेशन में अनुदेशन को छोटे-छोटे पदों/प्रकरणों में विभाजित करके एक निश्चित क्रम में विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है।
- इन छोटे-छोटे पदों को फ्रेम कहा जाता है।
- अभिक्रमित अनुदेशन का विचार सबसे पहले आज से लगभग 2000 वर्ष पूर्व सुकरात ने दिया था।
- इन्होंने कहा था कि विद्यार्थी अध्यापक की अनुपस्थिति में भी सीख सकता है।
- सुकरात के विचार को मूर्त रूप प्रदान करते हुए वी. एफ. स्कीनर ने अभिक्रमित अनुदेशन की रूपरेखा प्रस्तुत की अतः स्कीनर को अभिक्रमित अनुदेशन के जनक के रूप में जाना जाता है। (1954 में)
- सर्वप्रथम लिखित परीक्षा 1902 में कैंब्रिज विश्वविद्यालय ब्रिटेन में।
- अभिक्रमित अनुदेशन शिक्षण मशीनों पर आधारित तकनीक है।
- सर्वप्रथम शिक्षण मशीन का आविष्कार सन् 1912 में थॉर्नडाइक किया जो अभिक्रमित अनुदेशन पर आधारित थी।
- अभिक्रमित अनुदेशन का आधुनिकीकरण सीडनी, एल फ्रेशे ने सन् 1922 में किया जो ओहियो स्टेट विश्वविद्यालय अमेरिका में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत थे।
- अभिक्रमित अनुदेशन अधिगम के क्रिया प्रसुत सिद्धान्त (सन् 1930 वी. एफ. स्कीनर) पर आधारित है।
- भारत में अभिक्रमित अनुदेशन की शुरुआत सन् 1963 इलाहाबाद में की गयी।

अभिक्रमित अनुदेशन

<p>↓</p> <p>1. रेखीय</p> <p>प्रवर्तक — B.F. स्कीनर</p> <p>सन् — 1954</p> <p>बच्चे — सामान्य बच्चे</p> <p>उद्देश्य — व्यवहार में परिवर्तन</p>	<p>↓</p> <p>2 शाखीय</p> <p>नॉरमन. ए. क्राउडर</p> <p>1960</p> <p>उच्च बुद्धि वाले बच्चे</p> <p>उपचारात्मक शिक्षण</p>	<p>↓</p> <p>3. अवरोह/ मथेटिक्स</p> <p>T.F. गिलबर्ट</p> <p>1962</p> <p>शरारती बच्चे</p> <p>विषयवस्तु का स्वामित्व</p>
---	--	---

प्रश्न — ब्लूम की पाठ योजना आधारित है।

- | | |
|-------------------|------------------|
| (a) उद्देश्यों पर | (b) प्रस्तुतीकरण |
| (c) विषय वस्तु पर | (d) उपरोक्त सभी |

उत्तर — (c)

प्रश्न — वस्तुनिष्ठ प्रश्न का प्रकार है—

- | | |
|-----------------------|--------------------------|
| (a) आलोचनात्मक प्रश्न | (b) विश्लेषणात्मक प्रश्न |
| (c) मिलान प्रश्न | (d) व्याख्यात्मक प्रश्न |

उत्तर — (c)